1 शैक्षिक मनाविज्ञान की अवधारणा, क्षत्र व उपयागिता

(1) शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार व प्रकृति (2) मनोविज्ञान का अर्थ, विकास, सम्प्रदाय
(3) शिक्षा मनोविज्ञान अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, प्रकृति, उपयोगिता, विधियाँ

- शिक्षा मनोविज्ञान का आधार मानव व्यवहार है व मनोविज्ञान शिक्षा को आधार प्रदान करता है।
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** – शिक्षा मनोविज्ञान को व्यावहारिक विज्ञान माना जाता है, शिक्षा मनोविज्ञान सीखने के क्यों, कैसे व क्या से संबंधित है।
- आधुनिक शिक्षामनोविज्ञान के विकास में थार्नडाईक व कैटल का योगदान है।
- शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है –
  (1) शिक्षा (2) मनोविज्ञान

शिक्षा

- **क्रो एण्ड क्रो** – शिक्षा व्यक्तिकरण व समाजीकरण की प्रकिया है जिसमें सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है।
  शिक्षा – शिक्षा शब्द की उत्पत्ति **'शिक्ष्'** धातु से हुई है जिसका अर्थ है सीखना।
- **उत्पत्ति** – एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के एडुकेटम से हुई है। यह ए (E), ड्यूको (Duco) शब्दों से मिलकर बना हैं।
  – Educatum का अर्थ – अन्दर से बाहर निकालना।
  – एडुकेयर Educare – आगे बढ़ाना, प्रशिक्षित करना।
  – एडुसियर Educere– विकसित करना।

सीखने के तीन तत्त्व – जॉन डीवी–

- पुस्तक – **'शिक्षा तथा समाज'** में जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा त्रिमार्गीय प्रक्रिया है, इन्होंने प्रगति शील शिक्षा की अवधारणा दी जिसके अनुसार बालक एक सक्रिय विद्यार्थी होता है, इसमें रुचि, प्रयास महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक समाज में ईश्वर का प्रतिनिधि है। शिक्षा में जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना पर बल व शिक्षा को सामाजिक विकास का साधन मानना व सभी बालक एक सुयोग्य शिक्षा पाने के लायक होते हैं।
- जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम को सम्मिलित कर लिया जाये, तो हम शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया न कहकर त्रिमुखी प्रक्रिया मानें जिसके तीन अंग हैं – (1) शिक्षक, (2) बालक तथा (3) पाठ्यक्रम। इन्हीं तीन अंगों की पारस्परिक क्रिया में ही शिक्षा निहित है। जॉन डिवी ने बालक को सक्रिय विद्यार्थी कहा है। उन्होंने शिक्षा में सम्पूर्णता पर बल दिया है। वह उत्तम व समग्र शिक्षा सभी तरह के बच्चों को दी जानी चाहिए न कि केवल धनी बच्चों को।
  (1) शिक्षक (2) शिक्षार्थी (3) पाठयक्रम/समाज

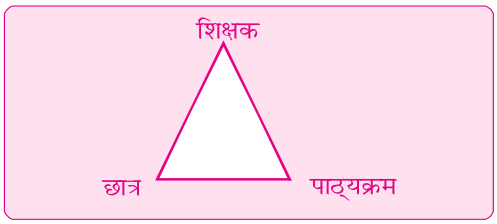

जॉन एण्डम्स ने सीखने के दो तत्व माने हैं –

शिक्षक ●——● छात्र

- जॉन डीवी प्रथम शिक्षाविद् है। इन्होने बाल केन्द्रित तथा प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा दी।
- **शिक्षा का संकीर्ण अर्थ** :– इसको **3R** कहा जाता है –
  1. लिखना (Writing)
  2. पढ़ना (Reading)
  3. गणना करना (Arithmetic)
  अथवा विद्यालय तक सीमित रहने वाली शिक्षा
- **शिक्षा का व्यापक अर्थ 4H** :– महात्मा गांधी ने दिया
  1. मानसिक विकास = Head 2. भावात्मक विकास = Heart
  3. क्रियात्मक विकास = Hand 4. शारीरिक विकास = Health
- अर्थात् वह शिक्षा जो जीवन पर्यन्त चलती है।

शिक्षा के तीन प्रकार हैं–

1. **औपचारिक शिक्षा माध्यम (Formal)** – निर्धारित समय व स्थान पर प्राप्त शिक्षा, जैसे : विद्यालय
2. **अनौपचारिक शिक्षा (Informal)** – जिसका समय व स्थान निर्धारित नहीं होता। जैसे : परिवार
3. **निरौपचारिक शिक्षा (Nonformal)** – दूरस्थ स्थान से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा, जैसे : पत्राचार, टी.वी. समाचार

शिक्षा की परिभाषा–

1. **स्वामी विवेकानन्द** – 'मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।' (The Expression of the perfection inherent in man it is education)
2. **ब्राउन** –शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है।
3. **महात्मा गाँधी** – 'शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति से है।' (By Education I mean the expression of the best de-

- यह चेतन, अर्द्धचेतन व अचेतन तीनों स्तर पर निर्धारित।
- यह चेतन मन का स्वामी है इसका सम्बन्ध वर्तमान, वास्तविकता तथा मानवता से है।
- न तो पूर्णतया सुखवादी व न ही आदर्शवादी तर्क पूर्ण होता है।
- व्यक्तित्व की कार्यपालक शाखा महत्त्व है (Executive Branch)
- मनोवैज्ञानिक वातावरण से उत्पन्न। (अभियोजन (Adjuster) के रूप में कार्य)
- सपनों पर नियंत्रण
- सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेना।
- बुद्धि से कार्य करना तथा सिपाही के रूप में कार्य करना।

◈ **अहं Ego की भूमिका –**

(i) शरीर-वर्द्धन तथा सुरक्षा की आवश्यकता की पूर्ति करना।

(ii) इदम् के आवेगों को वास्तविकता के अनुरूप व्यक्त करना।

(iii) इदम् तथा अधि-अहं की विरोधी इच्छाओं में समन्वय उत्पन्न करना।

(iv) बाधा के उपस्थित होने पर अपनी उपयुक्तता की रक्षा तथा चिन्ता से बचाव का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष 'सुरक्षात्मक प्रयासों'(Defence Mechanism) का प्रयोग करना।

जैसे : अवदमन (Represion),
प्रतिगमन (Regression),
प्रतिकरण (Reaction Formation)
रूपान्तरण (Conversion),
आरोपण (Projection),
तादात्म्य (Identification) इत्यादि।

(c) Super Ego पराहं/परम अहम् (अन्तरात्मा) परम आदर्श

- 3-4 वर्ष से विकास प्रारम्भ
- आदर्शवादी सिद्धान्त (Idealistic) से नियन्त्रित।
- इसका सम्बन्ध देवत्व से है।
- यह चेतन, अर्द्धचेतन व अचेतन तीनों ही होती है। यह ज्यादा चेतन द्वारा नियंत्रित होता है।
- यह आदर्शो व नैतिक मूल्यों की बात करता है। इदम् व अहम् पर नियंत्रण, नैतिक समीक्षक।
- यह मत करो, वो मत करे।
- यह अवास्तविक होता है।
- सामाजिक वातावरण से उत्पन्न सहवर्ती इच्छाओं का प्रतीक, जैसे – प्रेम करना व प्रेम पाना।

'अधि-अहं' (Super Ego) के प्रमुख कार्य व भूमिका

(i) इदम् के कामुक तथा आक्रामक आवेगों का अवरोध करना।

(ii) इदम् को यथार्थ लक्ष्यों के स्थान पर नैतिक लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर ले जाना।

(iii) सम्पूर्णता की प्राप्ति हेतु प्रयास करना।

- 'इदम्' के प्रबल होने पर व्यक्ति अनियन्त्रित, सुखवादी एवं स्वार्थी होगा। 'अधिअहं' (Super Ego) के अधिक प्रबल होने पर व्यक्ति का व्यवहार भले-बुरे के विचार से नियन्त्रित होता है, न कि वास्तविकता द्वारा। इन दोनों पक्षों की अतिरंजना असामान्यता का कारण बनती है। अहं के प्रबल होने पर व्यक्ति की जैविक तथा नैतिक अभिव्यक्ति में समायोजन रहता है ही सामान्य व्यक्तित्व का द्योतक है।

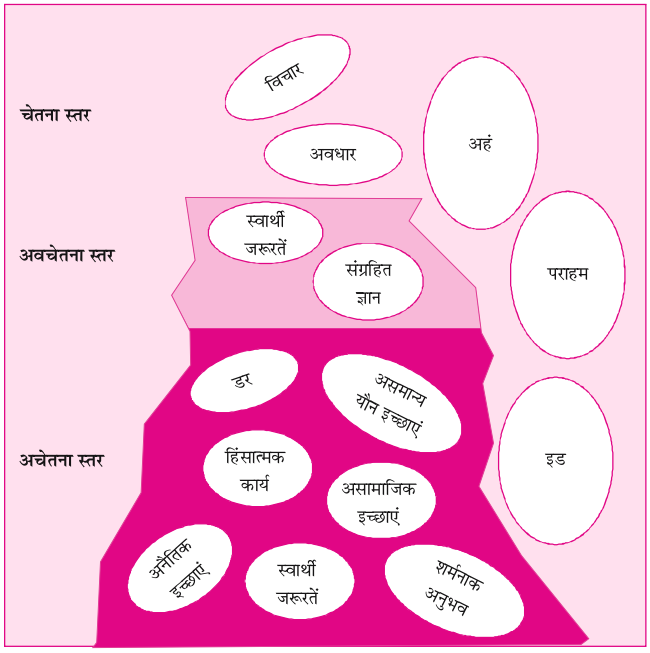

7. प्रेरकीय सम्प्रदाय –

- इसे हार्मिक मनोविज्ञान भी कहा जाता है। हार्मिक शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'हारले' से हुई है। जिसका अर्थ होता है आवेग-प्रवृत्ति-प्रेरणा।
- प्रतिपादक – विलियम मैक्डूगल
- 14 मूल प्रवृतियों पर बल, समूह मस्तिष्क (समूह के संवेग का उच्च स्तर होने पर व्यक्तिकता खत्म) पर बल दिया, उद्देश्यपूर्ण क्रिया पर बल।

विलियम मैक्डूगल
(1871-1938 ई.)

◈ **प्रेरकीय सम्प्रदाय –**

संबंध शिक्षा की प्रक्रिया में भाग लेने वाले व्यक्ति की प्रकृति, मानसिक जीवन व व्यवहार से है।

1. वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन (Study of Heredity and environment)
2. अभिवृद्धि व विकास का अध्ययन (Study of Growth and development)
3. अधिगम व अभिप्रेरणा का अध्ययन (Study of learning and motivation)
4. बुद्धि व व्यक्तित्व का अध्ययन (Study of intelligence and personality)
5. रूचियों व मूल प्रवृतियों का अध्ययन (Study of interests and basic instincts)
6. शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन (Study of Problems of education)
7. मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन (Study of Mental Health)
8. मापन व मूल्यांकन का अध्ययन (Measurment)
9. अनुशासन, शिक्षण विधियों व पाठ्यक्रम का अध्ययन (Study of discipline, teaching methods and curriculum)
10. असामान्य बालकों का अध्ययन (Study of abnormal children)
11. बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन (Study of individual differences of children)
12. सीखने की क्रियाओं का अध्ययन (Study of learning activities)
13. निर्देशन व परामर्श (Guidance and Counseling)

- **रूसो** - बच्चा एक पुस्तक की तरह है जिसके प्रत्येक पृष्ठ का अध्यापक को अध्ययन करना है।

14. अनुसंधान (Research) - अनुसंधान संबंधी क्रियाओं का अध्ययन
15. मानसिक क्रिया (संवेदना प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, चिन्तन, सीखना, कल्पना) सभी का अध्ययन (Study of mental activities)
16. अभिव्यक्ति व व्यवहार का अध्ययन (Study of expression and behavior) -
    (i) ज्ञानात्मक व्यवहार (Cognitive behavior)
    (ii) भावात्मक - संवेग, अनुभूति, भावना (Affective - emotion, feeling, emotion)
    (iii) क्रियात्मक - चलना, खेलना, दौड़ना, कुदना का अध्ययन (Functional- Study of waling, playing, running, jumping)
17. शारीरिक प्रक्रिया (Physiological Process) - रक्त दबाव, नाड़ी गति, हृदय का अध्ययन
18. समूह गतिशीलता व समूह (व्यवहार) (Group dynamics and behaviour) का अध्ययन

◈ विक्टर एच. नोल एवं रेचल पी. नोल के अनुसार शिक्षा-मनोविज्ञान का क्षेत्र -

1. **मानव-अभिवृद्धि एवं विकास में निम्न को शामिल किया है-** वंशानुक्रम एवं पर्यावरण, सामान्य अभिवृद्धि एवं विकास, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास, अभिप्रेरणा, परम्परा आधारभूत सिद्धान्त, व्यक्तिगत विभिन्नताएँ, बुद्धि, अभिरुचियाँ, रुचियाँ
2. **अधिगम में निम्न को शामिल किया है -** अधिगम की सामान्य प्रकृति, अधिगम को प्रभावित करने वाले तत्त्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम की प्रविधियाँ, कौशल, तर्क एवं समस्या समाधान, दृष्टिकोण, पाठशाला निश्चित स्तर का अधिगम, अधिगम में अन्तरण
3. **व्यक्तित्व एवं समायोजन में निम्न को शामिल किया है** संवेग, लोगों का मौलिक जीवन, अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य, विशिष्ट बालक, चरित्र, सामाजिक प्रतिक्रिया
4. **मापन एवं मूल्यांकन में निम्न को शामिल किया है-** मापन के आधारभूत सिद्धान्त, बुद्धि एवं अभिरुचि का मापन, अधिगम का मापन, समायोजन का मापन, मापन के परिणामों का मूल्यांकन
5. **शिक्षा मनोविज्ञान की विधि और प्रविधि में निम्न को शामिल किया है -** शैक्षिक समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन, सांख्यिकीय प्रविधियाँ, कक्षा के अध्यापक के लिए अनुसंधान की क्रियान्विति

◈ बी. क्लॉड व सहयोगियों ने 1977 में शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के बारे में बताया व सूत्र दिया

◈ शिक्षामनोविज्ञान - व्यवहारवादी विज्ञान × शैक्षिक प्रक्रिया × अध्ययन विधि विषयवस्तु (व्यवहारवादी विज्ञान से तात्पर्य - समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, नृ-विज्ञान इत्यादि)

◈ कॉलसेनिक ने शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में 7 समस्याओं को रखा है जिसका समाधान शिक्षा मना`विज्ञान करता है - (i) विभिन्न विद्यार्थियों में भिन्नता/भेद (ii) अभिप्रेरणा (iii) मानसिक स्वास्थ्य (iv) अनुदेशन की विधियाँ (v) चरित्र निर्माण (vi) कक्षा-कक्ष प्रबंध (vii) मूल्यांकन

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य -

◈ **स्कीनर** - शिक्षा मनोविज्ञान उन खोजों को शैक्षिक परिस्थितियों में प्रयोग करता है जो मानव प्राणियों के अनुभव व व्यवहार से है।

◈ **गैरिसन व अन्य** - शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यवहार का ज्ञान, भविष्यवाणी व नियंत्रण करना है।

◈ **कुप्पूस्वामी** - उद्देश्य मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को उत्तर शिक्षण व उत्तर अधिगम के हितों में प्रयोग करता है।

1. सिद्धांतों की खोज व तथ्यों का सग्रंह

concepts in terms of materials and objects in the physical environment)

- धीरे-धीरे खेल सामग्री की अपेक्षा अपने साथियों पर अधिक ध्यान देना सीखना। (Slowly focus more on your teammates than on the game material learning to give)
- अपने हम उम्र तथा अन्य बड़े बालकों के साथ समय व्यतीत करने में रूचि लेना।(Spending time with other children of our age and older take an interest in)
- अपने माता-पिता, भाई-बहिन तथा अन्य के साथ भावानात्मक रूप से रिश्ता बनाने की ओर बढ़ना। (Moving towards emotional bonding with parents, siblings and others.)

◈ **टेगोर** - मानव मामलों में संसार में 14 वर्ष की आयु से किशोर से अधिक परेशानी वाली को चीज नहीं होती।

◈ **विलियम एवं बर्टन** - किशोर एक विचित्र, कठिन, शिष्ट, स्वार्थी, परोपकारी, आदर्शवाली, सहानुभूतिपूर्व व क्रूर व्यक्ति होता है।

किशोर की अभिरूचियों के प्रकार -

1. मनोरंजनात्मक - खेल सिनेमा, अध्ययन, धूमना।
2. सामाजिक - समूह में रहना, जीविका पार्जन
3. व्यक्तिगत - वसा, रूप, रंग, सजना।
4. शैक्षिक - अध्ययन
5. व्यवसायिक
6. धार्मिक
7. प्रतिष्ठा अभिरूचि

किशोर के लिए शैक्षिक निर्देशन -

1. किशोर की योग्यता, रूचियों की पहचान व विकास में सहायता करना।
2. पाठ्यसहगामी क्रिया व पाठयक्रम चयन में सहायता करना।
3. व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन।
   जैसे : पिछड़े के लिए अभ्यास विधि, श्रव्य दृश्य, करके सीखना खेल विधि। प्रतिभाशाली के लिए सह पाठ्यान्तर क्रियाओं में संवर्धन व विविधता लाना।
4. पाठ्यपुस्तकों के चयन में सहायता व पुस्तकालय की विशेष सुविधा।
5. परीक्षा व विषयों की तैयारी के लिए विशेष निर्देशन।
6. विभिन्न शैक्षिक व व्यावसायिक संस्थानों की जानकारी प्रदान करना।

◈ **रॉस** - विषयों का शिक्षण व्यावहारिक ढंग से करते हुए दैनिक जीवन की बातों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करना।

विशेष - जेम्स मार्सिया -विकासात्मक मनोविज्ञान ये किशोरों के ईगो पहचान के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है इन्होंने किशोरों के पहचान संकट का अध्ययन किया है इन्होंने पहचान निर्माण की चार दशा का (पहचान संकट, पहचान स्थगन काल, पहचान प्रसार व पहचान उपलिब्ध का विश्लेषण किया) तथा संकट (पहचान विकास में किशोर की विकल्प खोज) तथा प्रतिबद्धता (प्रतिज्ञा) पहचान विकास का हिस्सा का भी अध्ययन किया है।

शारीरिक विकास
(Physical Development)

◈ **विकास के पहलु -**

नोट : शारीरिक परिवर्तनों में ऊँचाई, भार, शारीरिक अनुपात आदि बाह्य परिवर्तनों के साथ आन्तरिक अवयवों में परिवर्तन।

जैसे : स्नायु संस्थान(Nervous System), पाचन संस्थान(Digestive System), रक्त व उत्सर्जन संस्थानों (Blood and excretion systems) (इन्ड्रोसन ग्रन्थि में परिवर्तन) में परिवर्तन शामिल।

शारीरिक विकास के प्रकार(Types of Physical Development)-

बालक के शारीरिक विकास को चार प्रकारों में बाँटा गया है -

1. **लसीकाम (Lymphoid)** - इस प्रकार के विकास में बालक के विभिन्न शारीरिक अंग 11 या 12 वर्ष तक शीघ्रता से वृद्धि करते हैं, उसके बाद विकास में अत्यन्त मन्द गति दृष्टिगोचर होती है, 20 वर्ष की आयु तक बालक प्रौढ़ हो जाता है नीचे की आकृति में यह स्पष्ट हो रहा है इस प्रकार का विकास अधिकतर बालकों में देखा जाता है।

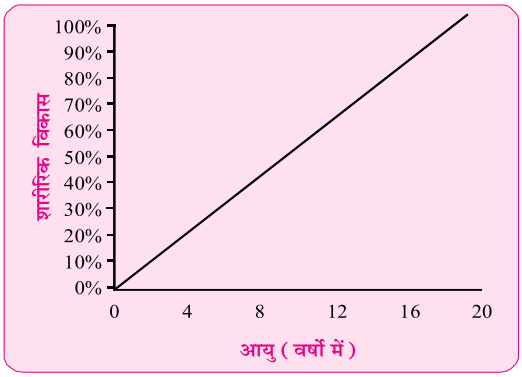

2. **तन्त्रिकीय (Neural)** - जब बालक का विकास 3 या 4 साल तक लगातार तीव्र गति से होने के उपरान्त मन्द पड़ने लगता है और 12 या 14 वर्ष तक प्रौढ़ावस्था में पहुंच जाता है तो उसे तन्त्रिकीय विकास कहते है।

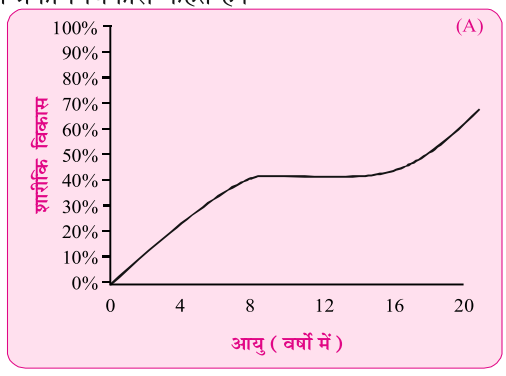

(a) मेडुला ऑबलागाटा –मूलभूत जीवन गतिविधि जैसे श्वास लेना, हृदयगति व रक्तचाप को नियमित।

(b) सेतु – निद्रा रचनातंत्र से जुड़ा होता है विशेषत: स्वप्न निंद्रा

(c) अनुमस्तिष्क – यह शारीरिक मुद्रा व संतुलन को बनाये रखने व नियंत्रण का कार्य करता है।

(ii) मध्य मस्तिष्क –पश्च व अग्र मस्तिष्क को जोड़ता है इसमें रेटिक्यूलर एक्टिवेटिंग सिस्टम होता है जो भाव जाग्रत के लिए उत्तरदायी होता है।

(iii) अग्र मस्तिष्क – यह सभी प्रकार की संज्ञानात्मक, संवेगात्मक व प्रेरक गतिविधि को करता है।

(a) अधश्चेतक – यह शारीरिक प्रक्रिया को नियमित जैसे भोजन करना, पानी पीना, सोना, कामोतेजना व शरीर के आंतरिक वातावरण हृदयगति, रक्तचाप व तापमान को नियत्रित व नियमित करता है।

(b) चेतक – यह प्रसारण यंत्र की तरह ज्ञानेद्रिया से संकेतों को वल्कुट के हिस्से में भेजता है व वल्कुट से निकलने वाले संकेतों को शरीर के विभिन्न भागों में भेजता है।

(c) उपवल्कुटीय यंत्र – शरीर में शारीरिक तापमान, रक्तचाप व रक्तशर्करा का नियमन करके, आंतरिक समस्थिति को कायम रखता है यह अधश्चेतक से संबंधित है।

2. प्रमस्तिष्क (मानव मस्तिष्क 2/3 भाग) :-

- यह भाग सभी उच्चस्तरीय संज्ञानात्मक कार्य

जैसे : अवधान, प्रत्यक्षण, अधिगम, स्मृति, भाषा व्यवहार, तर्क व समस्या समाधान को नियमित करता है।

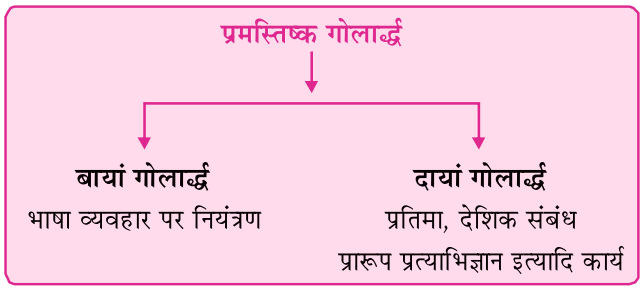

◈ **प्रमस्तिष्क वल्कुट के भाग –**

1. **ललाट पालि (Frontal Lobe)** – संज्ञान कार्य – अवधान, चिंतन, तर्क इत्यादि।
2. **पार्श्विक पालि (Parietal)** – त्वचा संवेदना, चक्षु व श्रवण संवेदा कार्य।
3. **शंख पालि (Temporal)** – श्रवण, शब्द, ध्वनि, भाषा व वाणी को समझना।
4. **पश्चकपाल पालि (Occipital)** – चक्षु सूचना।

◈ **मेरूरज्जु** – यह शरीर के निचले भागों से आने वाले संवेदी आवेगों को मस्तिष्क तक पहुंचाना व मस्तिष्क से आने वाले पशिय आवेगों को शरीर तक पहुँचाना।

◈ **प्रतिवृति क्रिया क्या है** – ये अनैच्छिक होती है स्वत: होती है **जैसे :** आँखे झपकना, सांस लेना, गरम या ठण्डी वस्तु से हाथ हटाना।

बाल विकास स्मरणीय तथ्य –

◈ स्मृति विस्तार का बालकों पर सर्वप्रथम अध्ययन **जेंकॉब्स (1887)** ने किया।

◈ बालकों के स्मरण का अध्ययन सर्वप्रथम **स्टीफेन्स (1900)** ने किया। (2 से 5 वर्ष के बालकों)

◈ हेनरी ने बाल्यवस्था की स्मृतियों को मापने के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया।

◈ बाल विकास परिणाम होता है – **वंशानुक्रम व वातावरण की अन्त: क्रिया का**

◈ **हैडो कमेटी** रिपोर्ट का सम्बन्ध है – किशोरावस्था

◈ किशोर वर्तमान की शक्ति या भावी को प्रस्तुत करता है – **क्रो एण्ड क्रो**

◈ किशोरावस्था तूफान, तनाव, संघर्ष व विरोध की अवस्था– **स्टेनले हॉल**

◈ किशोरावस्था एक नया जन्म है– **स्टेनले हॉल**

◈ 1904 में लिखित पुस्तक **'Adolsence'** – स्टेनले हॉल जीवन का कठिन काल – **किलपेट्रिक**

◈ किशोरावस्था के लिए एक ही शब्द है – **परिवर्तन – बिग/हण्ट**

◈ दिवास्वप्न की प्रवृत्ति – **किशोरावस्था**

◈ **विग-हण्ट** – जिन समूह से किशोरों का सम्बन्ध होता है वे उनके सभी कार्यो को प्रभावित करते है।

◈ **के.के. स्ट्रांग** – किशोर की रूचियों में 15 वर्ष तक स्थिरता आ जाती है।

◈ आत्मचेतना किसकी विशेषता है – **किशोर**

◈ किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है – **वैलेन्टीन**

◈ **स्कीनर** – किशोर के व्यवहार का अन्तिम व महत्त्वपूर्ण स्वरूप व्यक्तित्व प्रौढ़ता की दशा में बढ़ने में लक्षित होता है।

◈ किशोर के संवेगात्मक विकास के लिए उपयुक्त विधि– **शोधन/मार्गन्तीकरण**

◈ सामाजिक स्वीकृति की अवस्था – **किशोरावस्था**

◈ पूर्व किशोरावस्था 12 से 16 वर्ष, उत्तर किशोरावस्था 17 से 19 वर्ष

◈ संवेग अत्यधिक अस्थिर होते हैं – पूर्व किशोरावस्था

◈ शारीरिक विकास की चरम अवस्था है – **किशोरावस्था**

◈ दो बालक समान मानसिक योग्यता के नहीं होते है – **हरलॉक**

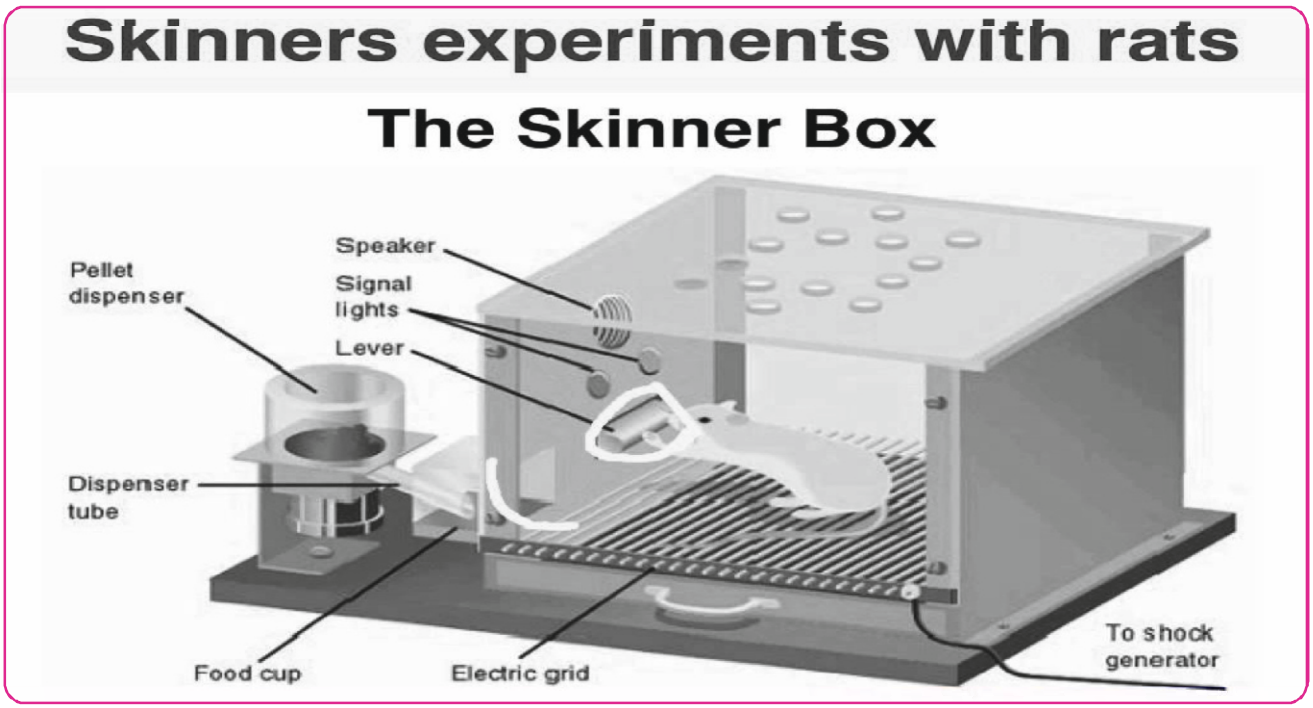

- **कबूतर पेटिका** – कबूतर पर प्रयोग करने के लिए स्किनर ने एक अन्य विशेष सयंत्र, जिसे कबूतर पेटिका (Pigeon Box) कहा जाता है, का उपयोग किया। कबूतर पर प्रयोग करते समय स्कि ने यह लक्ष्य सामने रखा कि कबूतर दाहिनी ओर एक पूरा चक्कर लगाकर एक सुनिश्चित स्थान पर चोंच मारना सीख जाए। इस प्रयोग में कबूतर पेटिका में बंद भूखे कबूतर ने जैसे ही दाहिनी ओर घूमकर सुनिश्चित स्थान पर चोंच मारी, उसे अनाज का एक दाना प्राप्त हुआ। इस दाने द्वारा कबूतर को अपने सही व्यवहार भी पुनरावृत्ति के लिए पुनर्बलन प्राप्त हुआ और उसने फिर दाहिनी ओर घूमकर चोंच मारने की अनुक्रिया की। परिणामस्वरूप उसे फिर अनाज का एक दाना प्राप्त हुआ। इस प्रकार धीरे-धीरे कबूतर ने दाहिनी और सिर घुमाकर चोंच मारने की क्रिया दाना प्राप्त करने का ढंग सीख लिया।
- अनुक्रिया सामान्यीकरण पर बल दिया है।(Response Generalization)
- **स्कीनर का अधिगम सिद्धान्त** – स्कीनर अधिगम सिद्धान्त को **रिक्त प्राणी उपागम (Empty Organism Approch)** भी कहा जाता है।
- **रिक्त प्राणी उपागम क्यों** – सीखने की व्याख्या करने के लिए जटिल सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं ओर ना ही दैहिक चरों की आवश्यकता इसलिए रिक्त प्राणी उपागम कहा गया।
- **स्कीनर के अनुसार** – इस सिद्धान्त को व्यवहार का निर्धारण बाह्य कारकों द्वारा होता है।
- **क्रिया प्रसूत अनुक्रिया क्या है ?** – टहलना, हंसना, चूहे द्वार लीवर दबाना ऐसी अनुक्रिया जिनका संबंध ज्ञात उद्दीपक से नहीं होता। इसका संबंध ऐच्छिक क्रिया से होता है।
- क्रिया प्रस्तुत में व्यवहार व उसके परिणाम पर बल दिया जाता है सापेक्ष पुनर्बलन पर बल दिया जाता है।
- चूहे पर प्रयोग किया गया बॉक्स पहले क्रिया प्रसूत अनुबंधन कक्ष था बाद में स्कीनर बक्स नाम रखा गया।

विशेष अवधारणा –

- **क्रिया प्रसुत (Operant) अनुबन्धन के नियम :-**

1. क्रियाप्रसूत अनुक्रिया जिसके बाद पुनर्बलित उद्दीपक दिया जाता है उसे प्राणी बार-बार करता है।
2. पुनर्बलित उद्दीपक वह उद्दीपक होता है जिससे क्रियाप्रसूत अनुक्रिया होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

- **सूत्र :** अनुक्रिया (Response) → पुनर्बलन (Reinforcement) → पुनरावृत्ति (Repetition) → साधन - अनुबन्ध (Instrumental Conditioning)
- **शृंखला (Chaining)** – जटिल कार्यो को छोटे-छोटे खण्डों में तार्किक क्रम में जोड़ना। प्रशिक्षक अनुक्रिया को एक क्रम में सीखता है जिससे आखिर में एक पुरस्कार मिलता है इसमें चिड़िया पर प्रयोग किया गया।

विशेष तथ्य –

- **सिद्धान्त की प्रमुख क्रियायें :-**

1. **संचयी रिकार्डिंग (Cumulative Recording)** – स्कीनर ने पशु के व्यवहार को रिकार्ड करने के लिए इसका प्रयोग किया।

इसमें प्रश्न करना है जिसके छात्र उत्तर देते है शिक्षक फिर सारांश बताता है महत्त्वूर्ण बिन्दु का स्पष्टीकरण करता है अन्त: में विषयवस्तु के छूटे भाग के प्रति पूर्वानुमान करते है इस प्रक्रिया से पठन क्षमता का विकास होता है।

◈ **सहयोगी अधिगम अवधारणा (Cooperative Learning)** - इसमें छात्र समूह बनाकर एक सामान्य लक्ष्य के लिए एक दूसरे के सहयोग से सीखते है प्रोत्साहित करते है, मदद करते है व शिक्षण भी करते है।

◈ वायगोत्सकी ने दो बालकों पर प्रयोग किया। पियाजे के तरह अवस्थाओं का उल्लेख नहीं किया व आंतरिक संभाषण (निजी) को चिंतन का उपकरण माना।

◈ **भाषा विचार** - संज्ञानात्मक विकास में भाषा व चिंतन महत्वपूर्ण है निज भाषा को महत्वपूर्ण माना है। भाषा के तीन प्रकार बताये है- (1) सामाजिक भाषा (2) आत्म भाषा
(3) स्वकेन्द्रित व व्यक्तिगत भाषा

◈ **भाषा विकास की अवस्था -**

1. **सहज अवस्था (Sahaj Stage)** - इस अवस्था में बालक कोई भी शब्द धीरे-धीरे आराम से सीखता है। आसानी से सीख लेता है। इसमें कोई चिंतन नहीं करता कि वह क्यों कर रहा है। इस अवस्था में अधिगम कराने के लिए चित्र का प्रयोग किया जाता है।
2. **अहं केंद्रित अवस्था (Ego-centered)**- इस अवस्था में वह अपने आप को महत्त्वपूर्ण समझता है और अपनी बातों को दुहराते रहता है।
3. **आंतरिक भाषण (Inner Speech)** - आत्म नियमन (Self Regulation) के लिए भाषा का उपयोग किया जाता है बालक मन-मन में पढ़ने लगता है तथा सोचने लगता है।

◈ Vygotsky वाइगोत्सकी ने चिंतन के लिए अवस्था बताया है जो कि निम्नलिखित है -

- **एक सी वस्तुओं को इकट्ठा करना** - एक जैसी वस्तुओं को इकट्ठा करता है वह अन्य से भिन्नता स्थापित करने का ज्ञान होता है।
- **सृजनात्मक रूप से चिंतन** - अपनी तरफ से भी कुछ चीजें जोड़ता है प्रत्यक्षीकरण।
- **संप्रत्यात्मक चिंतन** - इसमें सप्रत्यय को समझकर वह उत्तर देता है इसक लिए भाषा जरूरी है।

◈ Vygotsky वाइगोत्सकी का अधिगम सिद्धांत भी समाज-संस्कृति को महत्त्व देता है। इन्होंने समायोजन को भी महत्त्वपूर्ण माना है तथा कहा है कि समायोजन के लिए अधिगम महत्त्वपूर्ण है।

◈ वायगोत्सकी अनुसार चिंतन व भाषा दोनों ही स्वतंत्र रूप से पहले विकसित होते है बाद में आपस में मिल जाते है।

◈ आत्मभाषा - 3 वर्ष 7 वर्ष के मध्य

◈ सामाजिक भाषा - 2 वर्ष

◈ निजी संभाषण - चिंतन में सहायक (Inner Speech)

◈ **खेल व भाषा** - वायगोत्सकी ने खेल के विकास को महत्वपूर्ण माना है जिससे वह आत्मनुशासन, आत्मसंतुष्टि, आत्म बोध व आत्मनियमीकरण सीखता है।

◈ उसने सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों को मानव विकास व अधिगम में महत्त्वपूर्ण माना है।

◈ **वायगोत्सकी** - संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक कारक व भाषा को महत्वपूर्ण माना है।

◈ **वायगोत्सकी** - बालक भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्प्रेषण में अपितु स्वनिर्देशित कार्य करने व्यवहार हेतु योजना बनाने, निर्देश देने व मूल्यांकन में भी किया जाता है इस भाषा को निजी भाषा कहा है जबकि पियाजे ने निजी भाषा को आत्मकेन्द्रित व अपरिपक्व माना है जबकि वायगोत्सकी ने बाल्यवस्था में विचारों का महत्वपूर्ण साधन निजी भाषा को माना है।

अवधारणा मानचित्रण/संकल्पना नक्षा (Concept Maping)-

◈ इस अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग जोसेऊ डी. नोवक द्वारा 1960 में किया गया।

◈ इसकी उत्पत्ति निर्मितवाद से हुई है।

अर्थ -

◈ यह ज्ञान की सरंचना को स्पष्ट करने के लिए प्रभावी उपकरण है।

◈ यह समस्या केन्द्रित व छात्र केन्द्रि दोनों है। इसमें मैं छात्रों को क्या सीखना चाहता हूँ पर बल दिया जाता है।

◈ अवधारणाओं के संबंधों को चित्र द्वारा दर्शाता है।

◈ विचारों व जानकारियों को श्रेणीबद्ध संरचना में लेबल तीर के साथ जोड़ाता है।

◈ ज्ञान को संगठित रूप से व्यक्त करता है।

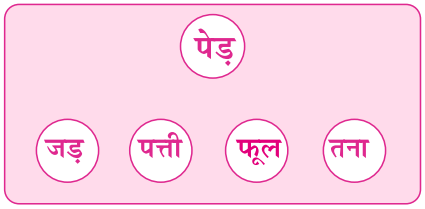

उपयोगिता -

1. अर्थग्रहयता को बढ़ाने में उपयोगी।
2. पाठ्यक्रम की योजनाओं के विकास में।
3. क्रमिक त्रुटियों का समाप्त करने।

अनुकरण नहीं होता ऐसे बालक ढीले-ढाले बैठे रहते है।

19. **अवधान विकास** - ध्यान अभाव अतिक्रियाशीलता विकृति ADHD (अटेशन डेफिसिट हाईपर एक्टिविटी डिसऑर्डर) तंत्रिका तंत्र से जुड़ा विकार जो ध्यान को प्रभावित करता है इसमें बैचेनी, दोषपूर्ण व्यवहार, ध्यान भटकना लक्षण है, कई बार अतिसक्रियता भी व्यवहार में दिखती है एक जगह स्थिर होकर बैठना पाना, इधर-उधर धूमना, भागना, ऊपर नीचे चढ़ना, उतरना, सड़क पर नियमों का पालन नहीं करना, जिद करना, गलती ना मानना, बातचीत के बीच में बोलना, जल्दबाजी व आवेश में कार्य करना, लड़ाई करना।
20. **डिसमोरफिया** - स्वयं को ज्यादा सुन्दर व ताकतवर समझना।
21. **हाईपोमानिया** - संवेगात्मक उत्सुकता व अत्यधिक क्रियाशीलता।
22. **साइकेस्थीनिया** - सनक, अपराध बोध

अधिगम पठार (Plateaus in Learning) -

◈ **रॉस** - अधिगम का पठार उस अवधि को व्यक्त करता है जब सीखने की गति एकदम रूक जाती है। इसके अन्तर्गत अधिगम वक्र ना तो ऊपर ना ही नीचे अपितु सामान्तर होता है तथा प्रगति दिखाई नहीं देती है। इसे सपाट स्थल कहा जाता है। इस में उतार-चढ़ाव नहीं होता। इसे अवरूद्धवर्द्धन कहा गया है।

अधिगम के पठार के कारण -

1. अभिप्रेरणा का अभाव
2. शारीरिक व मानसिक दोष आने पर आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता है।
3. दोषपूर्ण विधि
4. दोषपूर्ण पाठ्यक्रम
5. दोषपूर्ण वातावरण
6. रूचि, अवधान का न होना।
7. थकान का होना।
8. कार्य की जटिलता ।
9. आवश्यकता के अनुरूप नहीं होना।
10. पुरानी आदतों का नई आदतों से संघर्ष होना।
11. उत्साह हीनता
12. ज्ञान का अभाव होना।

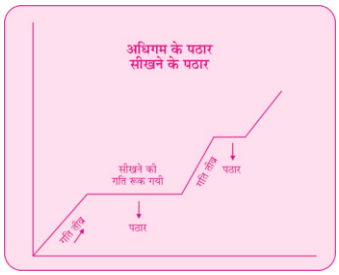

अधिगम वक्र (Learning Curve)

◈ **गेट्स व अन्य के अनुसार** -अधिगम वक्र सीखने की मात्रा गति तथा उन्नति को व्यक्त करते है। एबींगहॉस ने अधिगम वक्र का सबसे पहले उल्लेख किया।

1. **नकारात्मक (उन्नतोदर) (ऋणात्मक त्वरण वक्र) (Convex Curve)** - सीखने की गति आरम्भ में तेज होती है, धीरे-धीरे मंद होती जाती है।

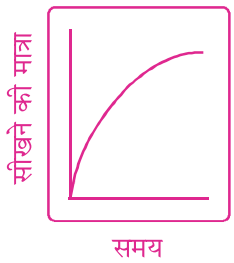

2. **सकारात्मक (नतोदर) (वर्धमान निष्पादन वक्र/धनात्मक) (Concave Curve)** - शुरूआत में धीमी बाद में तेज हो जाती है।

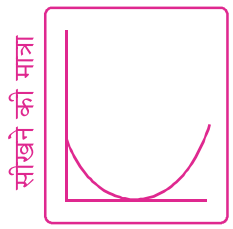

3. **मिश्रित (Combination Curve) (S-Shaped Curve)** - शुरूआत में धीमी, मध्य में तेज व अन्त में फिर धीमी होती है।

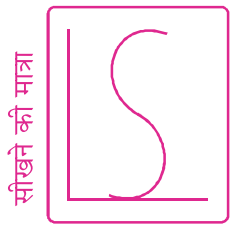

4. **सरल रेखीय वक्र (समान निष्पादन वक्र) (Straight Line Curve)** - सीखने की गति एक समान बनी रहती है।

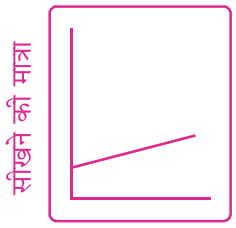

5. **शून्य त्वरित वक्र (Zero Curve)** - अधिगम में सकारात्मक परिवर्तनों का न होना।

◈ **अग्रोन्मुख प्रभाव (Pro active Effcet)** - पूर्व में सीखा हुआ (अधिगमित) कार्य वर्तमान में अर्जित होने वाले कार्य की धारणा को प्रभावित करता है इसे अग्रोन्मुख प्रभाव कहा जाता है।

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

अधिगम के परिणाम -

भी कहा है। इस तरह के अभिप्रेरक का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में न्यून या हीन अवस्थाओं जैसे : भूख, ठंढक, असुरक्षा आदि से उत्पन्न तनाव को दूर करने के लिए किया जाता है।

◈ वर्धन अभिप्रेरक से तात्पर्य उन अभिप्रेरकों से होता है जो व्यक्ति को अपने अन्त:शक्ति या अन्त:क्षमताओं (Potentials) की पहचान कर उसे विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। अत: यह निश्चित रूप से एक उच्चस्तरीय आवश्यकता है। इसे मैसलो ने मेटा आवश्यकता (Meta Needs) या सत्व अभिप्रेरक (Being or B-motives) कहा है। बी-अभिप्रेरक की उत्पत्ति तब होती है जब उसमें डी-अभिप्रेरक की संतुष्टि हो जाती है।

◈ मैसलो ने मेटा-आवश्यकताओं को मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए तथा अधिकतम वर्द्धन एवं विकास के लिए महत्त्वपूर्ण माना है। ऐसा नहीं होने से व्यक्ति मानसिक रूप से बीमार पड़ जाता है।

◈ मैसलो ने मेटा आवश्यकता में 18 तरह की आवश्यकताओं को सम्मिलित किया है जो इस प्रकार है सच्चाई (Truth), अच्छाई (Goodness), सुन्दरता (Beauty), पूर्णता (Unity), द्विभाजन उत्कर्ष (Dichotomy Transcendency), सजीवता (Aliveliness), अद्वितीयता (Uniqueness), पूर्णता (Protection), अनिवार्यता (Necessity), सम्पूर्ण (Completion), न्याय (Justice), क्रम (Order), सरलता (Simplicity), विस्तृतता (Comprehensiveness), प्रयासशीलता (Effortfulness), विनोदशीलता (Playfulness), आत्म-पर्याप्तता (Self-Sufficiency) तथा अर्थपूर्णता (Meaningfulness)। प्रत्येक मेटा आवश्यकता से संबंधित कुछ मेटा रोग भी होते हैं। जैसे : सच्चाई जैसी मेटा आवश्यकता की संतुष्टि नहीं होने पर व्यक्ति में विश्वासहीनता, शक तथा कटुता (Cynicism) पैदा होता है।

◈ **आत्मसिद्धि व्यक्तित्व (Self-Accomplished Personality)** - मैस्लो, स्वस्थ व्यक्तित्व की अवधारणा पर आधारित ऐसे व्यक्तियों का प्रत्यक्षण वास्तविक होता है, सरल, स्वाभाविक, सहज, समस्या केन्द्रित व्यवहार, अन्त:शक्तियों से युक्त होते है।

विशेष - मैस्लो ने 1959 में आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त में 3 नये तत्वों को शामिल किया है -

(i) उत्तेजना आवश्यकता (Stimulation need) - इसमें अन्वेषण, कार्य, यौन संबंध, उद्यमिता व जाँच पड़ताल को शामिल किया है। (यह शारीरिक आवश्यकता के बाद व सामाजिक आवश्यकता (प्रेम) से पूर्व आती है।)

(ii) एकीकरण/समग्र आवश्यकता (Whole Needs) - यह प्रतिष्ठा/ सम्मान आवश्यकता की पूर्ति के बाद तथा आत्मसिद्धि आवश्यकता से पूर्व आती है इसमें व्यक्ति यह सोचता है उसकी एकीकृत व सुसंगत छवि बने जिसके सभी से मनमुटाव समाप्त हो जावे व निष्पक्ष व अच्छे व्यवहार की स्थिति आ जाये।

(iii) आध्यात्मिक आवश्यकता (Meta Needs) - यह आत्म सिद्धि के बाद आती है यह व्यक्ति को वृद्धि लक्ष्य की ओर ले जाती है इस अभिप्रेरणा को मैस्लो ने 'B' Motivation कहा है जो सत्य, न्याय, सौन्दर्य, कल्पना व परमार्थ से जुड़ी होती है।

यह इस आवश्यकता की पूर्ति आत्म सिद्धि के बाद ना हो तो व्यक्ति मैस्लो के अनुसार आध्यात्मिक व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है इससे अवसाद, विलगाव, अरूचि, निराशा तथा संसार कुछ होता है या नहीं जैसे विचार उत्पन्न हो जाते है।

2. चालक (Drive)/प्रणोद/अन्तर्नोद - चालक शरीर की आन्तरिक क्रिया दशा है जो विशेष प्रकार का व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। **जैसे :** भूख, प्यास।

◈ **पी.टी. यंग (P.T. Young)** ने अपनी पुस्तक **'मोटीवेशन एण्ड इमोशन' (Motivation & Emotion)** में drive concept के संदर्भ में 6 अर्थों की सूची दी गई है -

(i) Drive शक्ति है, जोकि शरीर को गति प्रदान करती है।
(ii) यह आन्तरिक उद्दीपन है, जो कि शरीर को गति देता है।
(iii) यह आन्तरिक ऊतक (Tissue) परिस्थिति है जो कि शक्ति प्रदान करती है और अन्तत: क्रिया घटित होती है।
(iv) यह सामान्य क्रिया है।
(v) यह व्यवहारात्मक प्रवृत्ति है।
(vi) यह प्राणी की विशिष्ट लक्ष्य-निर्दिष्ट क्रिया है।

- **शेफर व अन्य** - चालक एक सुदृढ़ व अचल उत्तेजक है जो मानव प्राणी को क्रियाशील बनाता है।

3. उद्दीपन (Incentive) या प्रोत्साहन -

जिस तत्व द्वारा चालक की सन्तुष्टि होती है यह सन्तुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है। उसे उद्दीपन या प्रोत्साहन (प्रोत्साहन/उद्दीपक) दो प्रकार से -

(i) सकारात्मक (Positive) - प्रशंसा, पुरस्कार इत्यादि।
(ii) नकारात्मक (Negative) - दु:ख, दण्ड इत्यादि।) कहा जाता है।

जैसे : भूख चालक के लिए भोजन उद्दीपन या प्रोत्साहन होगा।

- **बोरिंग व अन्य** - एक स्थिति या क्रिया जो व्यवहार को उद्दीपन

7 बुद्धि (Intelligence)

(1) अर्थ, परिभाषा, विशेषताएँ (2) प्रकार, सिद्धान्त व बुद्धि परीक्षण
(3) संवेगात्मक बुद्धि तत्व उपयोगिता विशेषता

◈ **सामान्य अर्थ** – बुद्धि विचार करने व समस्त मानसिक क्रियाओं का संगठित रूप होती है। यह सीखने की योग्यता है समस्या समाधान की योग्यता है व समायोजन प्राप्त करने की योग्यता है।

बुद्धि की परिभाषाएँ तीन वर्गों में दी गई है –

◈ **समायोजन की योग्यता (Adjustabity)** – इसमें रॉस, बर्ट, स्टर्न, वुडवर्थ, बिने, मैक्डूगल, गोडार्ड, विलियम जेम्स आदि आते है।

◈ **सीखने की योग्यता (Learning ability)** – इसमें बकिंघम, डीयरबार्न, थार्नडाईक, कालविन आते है।

◈ **अमूर्त चिन्तन की योग्यता (Ability of abstract thinking)** – इसमें स्पीयरमैन, टर्मन, बिने, बर्ट, व फ्रीमैन आते है।

परिभाषाएँ –

◈ **बोरिंग** के अनुसार – बुद्धि परीक्षण जो मापता है, वही बुद्धि है।
(Intelligence is what intelligence test measures)

◈ **बकिंघम** के अनुसार – बुद्धि सीखने की योग्यता है।
(According to Buckingham, intelligence is the ability to learn)

◈ **कॉलसेनिक** के अनुसार– बुद्धि विभिन्न योग्यताओं का योग है।
(According to Klesnik - Intelligence is the sum of various abilities)

◈ **वुडवर्थ** के अनुसार – बुद्धि कार्य करने की एक विधि है।/बुद्धि का अर्थ है प्रतिभा का प्रयोग करना।
(According to Woodworth, intelligence is a method of functioning Intelligence means to use the talent)

◈ **टर्मन** के अनुसार – बुद्धि अमूर्त विचारों को सोचने की योग्यता है।
(According to Terman - Intelligence is the ability to think abstract ideas)

◈ **अल्फ्रेड बिने** के अनुसार – बुद्धि इन चार शब्दों में निहित है – ज्ञान, आविष्कार, निर्देश, आलोचना।
(According to Alfred Binet - Intelligence lies in these four words)

◈ **स्टर्नबर्ग** के अनुसार – बुद्धि आलोचनात्मक ढंग से सोचने की प्रक्रिया है।
(According to Sternberg- intelligence is the process of thinking critically)

◈ **थर्स्टन** के अनुसार – बुद्धि विभिन्न वस्तु व विचारों के मध्य जटिल संबंधों को समझने की योग्यता है।
(According to Thrston - Intelligence is the ability to understand Complex relationships between different objects and ideas)

◈ **वेक्सलर/वेश्लर** के अनुसार – बुद्धि एक सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है तथा समायोजन स्थापित करता है। (According to Wechsler/Wechsler-intelligence is public ability with the help to which the person takes purposeful action and adjusts installs)

◈ **डीयर बोर्न** के अनुसार – बुद्धि सीखने या अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता है। (According to Deer Born- Intelligence is the ability to learn or benefit from experience)

◈ **रोबर्ट स्टर्नबर्ग** – बुद्धि वह योग्यता है जिससे व्यक्ति पर्यावरण के प्रति अनुकुलित होता है अपने समाज व संस्कृति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पर्यावरण के कुछ पक्षों का चयन करता है व परिवर्तित करता है।

◈ **वुडरो** – बुद्धि ज्ञान का अर्जन करने की योग्यता है।
(Woodrow- Intelligence is the ability to acquire knowledge)

◈ **डीयरबार्न** – बुद्धि सीखने या अनुभव से लाभ उठाने की क्षमता है।

◈ **हेनमान** – बुद्धि के दो तत्व होते है–ज्ञान की क्षमता व निहित ज्ञान।

◈ **थार्नडाईक** – सत्य या तथ्य के दृष्टिकोण से उत्तम प्रतिक्रियाओं की शक्ति ही बुद्धि है।

◈ **कालविन** – बुद्धि वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता है।

◈ **रैक्स व नाइट** – बुद्धि वह तत्व है जो सब मानसिक योग्यताओं मे सामान्य रूप से सम्मिलित रहता है।

◈ **स्टोडार्ड** – बुद्धि उन क्रियाओं को समझने की योग्यता है जिसमें कठिनता, जटिलता, अमूर्तता, मितव्ययता, सामाजिकता व मौलिकता की उत्पत्ति होती है।

◈ **वेल्स** – बुद्धि वह शक्ति है जो व्यवहार को इस ढंग से संयोजित करती है हम नवीन परिस्थितियों मे अच्छी तरह कार्य कर लेते है।

◈ **बिनेट** – किसी समस्या को समझने, उसके विषय में तर्क करना व किसी निश्चित निर्णय पर पहुँचना बुद्धि है।

◈ **मैक्डूगल** – बुद्धि अतीत के अनुभवों के आधार पर जन्मजात प्रवृत्ति को सुधारने की योग्यता है।

◈ **हसबैण्ड** – बुद्धिमान व्यक्ति अपने अनुभवों को प्रभावपूर्ण ग्रहण करता है ध्यान लगाने व अनुकूलन करता है।

- बेकर व लीलैण्ड।

12. आर्थर क्रियात्मक बिन्दु स्केल परीक्षण।

13. प्रमिला पाठक –

- गुड एन.एफ. ड्रा परीक्षण (भारतीय)
- 4 से 13 वर्ष

14. सिगुईन फॉर्म बोर्ड परीक्षण –

- 1907, सिगुईन

15. वान का चित्र शब्दावली परीक्षण –

सामूहिक बुद्धि परीक्षण के प्रकार –

1. सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Verbal Group Intelligence Test):–

(i) आर्मी अल्फा – आर्थर एस. ओटिस (1917) रोर्बट येरकिस गणित सम्बन्धी समस्याएँ, सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित समस्याएँ, अनुक्रमिक सम्बन्धी समस्याएँ, शब्दों का सम्बन्ध आदि परीक्षण होते है।

(ii) सेना सामान्य वर्गीकरण – शब्दावली, गणितीय तर्क आदि।

(iii) टर्मन का सामूहिक परीक्षण – 1920 में।

(iv) टर्मन – मैकनिमर का मानसिक योग्यता परीक्षण (1941)

◈ **भारत में निर्मित बुद्धि परीक्षण –**

नोट :

(i) पहला परीक्षण डॉ. जे. मैनरी द्वारा 1927 में सामूहिक शाब्दिक परीक्षण (पहले भारतीय)

(ii) **सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण –**
प्रतिपादक – डॉ. एम.सी. जोशी
12 से 19 वर्ष के लिए
यह सामूहिक बुद्धि भारतीय परीक्षण

(iii) **प्रयाग मेहत्ता सामुहिक बुद्धि परीक्षण (1961) –** 12 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए।

(iv) साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण
प्रतिपादक – डॉ. एस. एस. जलोटा (1963)
12 से 16 वर्ष, 100 प्रश्न

2. सामूहिक अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Non Verbal Group Test) –

(i) आर्मी बीटा परीक्षण –

- प्रतिपादक – आर्थर S ओटिस तथा रोबर्ट येरकिस
- 1919 (भूलभूलैया, चित्र, पूर्ति, ब्लॉक, विद्यार्थियों से व्यस्कों तक)

(ii) शिकागो क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण – प्रतिपादक का उल्लेख नहीं मिलता।

- 6 वर्ष से व्ययस्कों के लिए उपयोगी

(iii) संस्कृति मुक्त परीक्षण (1944) (Culture- free Intelligence Test) –

- प्रतिपादक – R.B. कैटेल – 3 स्तर।
- (1) 4–8 वर्ष (2) 8 से 12 वर्ष।
  (3) हाई स्कूल के बच्चों के लिए। G कारक का मापन करता है।

(iv) रैवने प्रोग्रेसिव मेट्रीसेज परीक्षण –

- प्रतिपादक – जे.सी. रैवेन (1938) (लोकप्रिय परीक्षण)
- यह सांस्कृतिक मुक्त परीक्षण भी कहा जाता है। अमूर्त चिंतन, तार्किक चिंतन व प्रत्यक्षण की तीव्रता का मापन करता है। इसमें पाँच उपपरीक्षण शामिल है। यह एक अशाब्दिक परीक्षण है।
- उपयोगी – रंगीन सांचों का प्रयोग। (छोटे बच्चों के लिए उपयोगी)

3. मिश्रित बुद्धि परीक्षण /गति परीक्षण –

(I) वेक्सलर/वेश्लर बुद्धि परीक्षण –

- प्रतिपादक– डेविड वेक्सलर, 1939 में बनाया (1944, 1955) (संशोधन)
- 16 से 64 वर्ष के व्यक्तियों के लिये। (बच्चों के लिए 5 से 15 वर्ष के तक के बच्चों के लिए भी है)
- 7 शाब्दिक व 7 अशाब्दिक उप परीक्षण।
- 7 शाब्दिक – सूचना, बोध, अंक, विस्तार, शब्दावली, अंकगणितीय, समानता, अक्षर संख्या परीक्षण।
- 7 अशाब्दिक – चित्र पूर्ति, चित्र व्यवस्था, ब्लॉक डिजाइन, वस्तु सज्जीकरण, अंक प्रतीक, भूलभुलैया, संकेत खोज, भूलभुलैया, संकेत खोज।

  नोट : भारत में इसका अनुवाद मजमुदार ने किया था।
- मलिन्स ने 1969 में भारत में 6 – 15 वर्ष के बच्चों के लिए वेश्लर परीक्षण का निर्माण किया।

  नोट : भारत में पहला मिश्रित परीक्षण **पी.एन. मेहरोत्रा** ने 1975 में किया। 11 से 17 वर्ष के लड़कियों की बुद्धि का मापन व 7 से 12 वर्ष के लड़को की बुद्धि मापन करता है

विशेष अन्य महत्वपूर्ण परीक्षण –

◈ **पीवीडी चित्र शब्दावली परीक्षण –** प्रतिपादक – डन्न
2½ वर्ष से 18 वर्ष तक मापन।
व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षण

◈ **कॉफमैन मूल्यांकन परीक्षणमाला (KABC) -**
प्रतिपादक – कॉफमैन – कॉफमैन (1983), व्यक्तिक परीक्षण
2½ वर्ष 12½ वर्ष तक मापन, तरल व ठोस बुद्धि का मापन

1. सामूहिक बुद्धि परीक्षण – डॉ. प्रयाग मेहता (1962)

◈ **मुख्य प्रकार –**

1. **अन्त: वैयक्तिक (Intrapersonal)** –हम स्वंय/अपने आप से कैसे भिन्न है।
2. **अन्तरवैयक्तिक (Interpersonal)** –हम दुसरों से कैसे भिन्न है।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के स्वरूप–

◈ **विभिन्नता (Variability)** –इसका तात्पर्य दो व्यक्तियों में शील गुणों में अन्तर पाया जाता है।

◈ **प्रसामान्यता (Normality)** –इसका तात्पर्य यह है कि यदि किसी समूह में शीलगुणों की जाँच की जाएँ तो अधिकत्तर व्यक्ति में सामान्यता पाई जायगी। जैसे – अधिकत्तर बच्चे सामान्य बुद्धि के होते है। बहुत कम प्रतिभाशाली व मन्द बुद्धि होते है।

◈ **अभिवृद्धि व सीखने की दर में विभेदन (Differential rate of Growth and learning)** –बच्चों में शारीरिक विकास व सीखने की गति में अन्तर पासा जाता है।

◈ **शीलगुणों के परस्पर संबंध (Inter-relationship of traits)** –एक शीलगुण दुसरी शीलगुण से प्रभावित होता है।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार/क्षेत्र (Types of Individual Difference) –

1. **शारीरिक विभिन्नताएँ (Physical differences)** – बड़ा छोटा, काला गोरा रंग, मोटा पतला, इत्यादि।
2. **मानसिक विभिन्नताएँ (Mental differences)** – प्रतिभाशाली, मन्द बुद्धि।
3. **संवेगात्मक विभिन्नताएँ (Emotional differences)** – शान्त, आक्रमणशील, क्रोधी इत्यादि।
4. **सीखने की गति में विभिन्नताएँ (Differences in the pace of learning)** – कोई तेज गति से तो कोई मन्द।
5. **विचारों की विभिन्नताएँ (Difference of opinion)** – कोई राजनैतिक कोई गैर राजनैतिक।
6. **व्यक्तित्व में विभिन्नताएँ (Differences in personality)** – अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी।
7. **रूचियों में विभिन्नताएँ (Differences in Interests)** – कोई खेलने में कोई अध्ययन में।
8. **चरित्र में विभिन्नताएँ (Differences in Character)** – कोई नैतिक कोई अनैतिक।
9. **गामक विभिन्नताएँ (Developmental differences)** – बालक जल्दी चलना सीखता है दुसरा नही सीख पाता हैं।
10. **लैंगिक विभिन्नताएँ (Gender Differences)** – स्त्रियों का हस्तलेख अच्छा, कला में अन्तर, भाषायी योग्यता में अन्तर पाया जाता हैं।
11. **उपलब्धि विभिन्नताएँ (Achievement Variations)** – प्रत्येक व्यक्ति अलग–अलग होते हैं।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक/कारण –

1. **वंशानुक्रम (Hereditary)** – शारीरिक विभिन्नता व मानसिक विभिन्नता पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता हैं।
2. **वातावरण (Environment)** – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा व्यक्तित्व के प्रत्येक भाग को प्रभावित करता है।
3. **प्रजाति/जाति (Race/Caste)** – क्षत्रिय, व्यापारी, ब्राह्मण में अन्तर दिखायी देता है उसी प्रकार अमेरिकन व नीग्रो जाति के लोगो की विभिन्नताएँ पायी जाती है।
4. **शिक्षा (Education)** – साक्षर व निरक्षर के व्यवहार में विभिन्नता पायी जाती है।
5. **लिंग का प्रभाव (Effect of Gender)** – लड़कियाँ अधिक दयालु, सहानुभूति पूर्ण व कोमल जबकि लड़के बहादुर कठोर कार्यकुशल होते है।
6. **आर्थिक स्थिति का प्रभाव (Effect of Economic Status)** – निर्धनता व अमीरी भी प्रभावित करती है
7. **आयु का प्रभाव (Age Effect)**
8. **परिपक्वता का प्रभाव (Maturity Effect)**
9. **बुद्धि का प्रभाव (Effect of intelligence)**

व्यक्तिगत विभिन्नताओं का शैक्षिक महत्त्व –

◈ बालकों का वर्गीकरण करने में सहायक।
◈ गृहकार्य देने में सहायक।
◈ व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान करने में सहायक। जरूरत व रूचि के अनुसार
◈ शिक्षण विधि का चयन करने में सहायक।
◈ उपयोगी, लचिला व व्यवस्थित पाठ्यक्रम का निर्माण करने में सहायक।
◈ बालकों को विशिष्ट रूचियों का विकास करने में सहायक।
◈ कक्षा का वर्गीकरण करने में सहायक। विषम समूह बनाकर।
◈ शारीरिक दोषों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में सहायक।
◈ **वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययन की विधियां –**

(i) बुद्धि परीक्षण (I.T.)
(ii) उपलब्धि परीक्षण (A.T.)
(iii) संवेग परीक्षण (E.T.)
(iv) अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude Test)
(v) अभिरूचि परीक्षण (Interest Test)
(vi) व्यक्तित्व परीक्षण (Personality Test)

शिक्षा।

- सरल व शिक्षण विधि – शैक्षिक पर्यटन, खेल का प्रयोग

◈ **निदानात्मक उपचारात्मक विधि (Diagnostic and therapeutic method)** – कारणों का पता लगाकर समाधान।

◈ सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा।

◈ हस्तकौशल की शिक्षा – शारीरिक श्रम की शिक्षा, सास्कृतिक शिक्षा, नृत्य संगीत नाटक कार्य पुस्तकों का प्रयोग, गति की अपेक्षा शुद्धता पर बल, मौखिक कार्यो पर बल, चित्रकारी इत्यादि की शिक्षा।

◈ **बहुमुखी व विविध कोर्स**– जीवन केन्द्रित शिक्षा, सांस्कृतिक, नृत्य, संगीत, नाटक, कला।

◈ कार्य पुस्तकों का प्रयोग/श्रव्य–दृश्य से सहायक सामग्री का प्रयोग।

3. मन्दबुद्धि बालक (Mentally Deficient Child) –

◈ **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार – वे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है, मन्दबुद्धि बालक होते हैं ।

◈ **स्कीनर** जो छात्र एक वर्ष में निर्धारित कार्यक्रम पुरा नहीं कर पाते है मन्द बुद्धि छात्र कहलाते है।

◈ **मानसिक मंदता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –**

◈ मानसिक मंदता का सबसे पहला महत्त्वपूर्ण अध्ययन फ्रांस (France) में 1799 में जीन इटार्ड (Jean Itard) द्वारा किया गया जब उन्होंने भिक्टर नामक बच्चे का अध्ययन किया तथा जिसे 'वाइल्ड वॉय ऑफ ऐभेरोन' (Wild Boy of Averon) के शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया।

◈ इटार्ड के इस कार्य से प्रोत्साहन प्राप्त करके उनके एक शिष्य जिसका नाम इडोआर्ड सेगुईन (Edowata Seguin) था, ने 1837 में पेरिस में मानसिक रूप से मंदित बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र (training centre) खोला।

◈ 1940 में इंग्लैंड में मानसिक रूप से मंदित बच्चों के लिये पहला आश्रम (Asylum) खोला गया जबकि अमेरिका में ऐसे बच्चों के लिए पहला इस ढंग का संस्थान 1847 में मासासूसेटस (Massachusetts) में खोला गया था जिसका नाम वाल्टर ई. फर्नल्ड स्टेट स्कूल (Walter E. Fernald State School) था।

◈ मानसिक मंदता के इतिहास में ग्रिगोर मेन्डल (Gregov Mendel) का कार्य जिसमें आनुवंशिकता (heredity) के महत्त्व पर अधिक बल डाला गया, काफी महत्त्वपूर्ण है। आर.एल. इगडेल (R.L. Dugdale) ने 1877 में मानसिक मंदता का सबसे पहला पारिवारिक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने मानसिक रूप से मंदित दो बहनों के पारिवारिक वंशवृक्ष (family pedigree) तैयार किया और पाया कि उनके बच्चों मे मानसिक मंदता उत्पन्न होने की संभावना अधिक थी। कुछ वर्षो बाद अर्थात् 1912 में एच.एच. गोडार्ड (H.H. Godard) कालिकाक (Kallikak Family) परिवार पर अध्ययन किया गया परिणाम को प्रकाशित किया जिसमें भी मानसिक मंदता का एक स्पष्ट आनुवंशिक आधार पाया गया।

◈ **मानसिक दुर्बलता की प्रमुख विशेषताएँ –**

1. **सीमित बौद्धिक क्षमता (Limited Intellectual Capacity)** – मानसिक दुर्बलता का सबसे प्रमुख लक्षण बौद्धिक क्षमता है।

2. **सीमित समायोजन व्यवहार (Limited Adaptive Behaviour)** – मानसिक दुर्बलता में समायोजन–योग्य व्यवहार की कमी पायी जाती हैं या ऐसा व्यवहार बहुत ही सीमित मात्रा में किया जाता है।

3. **शारीरिक न्यूनता (Bodily Inferiority)** – मानसिक दुर्बलता में मानसिक विकास तो सामान्य से कम होता ही है, साथ–साथ शारीरिक विकास (physical development) भी सामान्य से हीन या न्यून होता है। जैसे – ऐसे लोगों के होंठ भद्दा, नाटा कद, चेहरे पर सूखापन, चमड़ी मोटी, आँख एवं नाक में निश्चित सामंजस्य की कमी आदि स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है जिससे उसकी शारीरिक–न्यूनता की स्पष्ट झलक मिलती है।

4. **सामाजिक अयोग्यता (Social Disablity)** – मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति में बुद्धि का स्तर चूँकि सामान्य से कम होता है, इसलिए वे नि:संकोच होकर यौन–संबंधी अपराध एवं अन्य समाज–विरोधी कार्य करते है। ऐसे व्यक्तियों में कुछ प्रमुख सामाजिक शीलगुण जैसे–आत्म–संयम (self-restraint), आत्मरक्षा (self-protection) आत्म–विश्वास (Self-dependency), आत्म–सम्मान (Self-esteem) तथा अपर्याप्तता (Self-reliance) आदि शीलगुणों को अपर्याप्तता देखी जाती है ।

5. **शिक्षा एवं प्रशिक्षण की अपर्याप्तता (Inadequacy of Education and Training)** – मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त व्यक्तियों में उम्र के अनुसार शिक्षा (education) तथा प्रशिक्षण (training) प्राप्त करने की अक्षमता या अपर्याप्तता (inadequacy) होती है। फलस्वरूप ऐसे लोग किसी प्रकार के औपचारिक (formal) तथा/या अनौपचारिक (informal) शिक्षणे ग्रहण करने अथवा कोई कार्य करने में पर्याप्त प्रशिक्षण पाने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं।

6. **सीमित प्रेरणा एवं संवेग (limited motivation and emotion)** – मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) से ग्रस्त

निर्देशन प्राप्त होता है।

नोट : अध्ययन बताते है छोटे परिवार के बच्चों में ज्यादा सृजनात्मकता व मध्यम व अन्तिम जन्मक्रम के बालक में ज्यादा सृजनात्मकता पायी जाती है।

◈ **डेविस** ने सृजनशीलता के पोषण हेतु 4 तकनीकों उल्लेख किया –
(I) भाग परिवर्तन विधि (ii) चेकर बोर्ड
(iii) जाँच सूची (iv) समान वस्तु की खोज

◈ सृजनात्मकता के विकास में क्रमिक अवस्था जे.डी. अरस्ते ने 4 अवरोध बताये है –

(i) प्रथम क्रान्तिक अवस्था – 5–6 वर्ष जब उसे विद्यालय व घर के नियमों का पालन व नियंत्रण होता है। इसमें सृजनात्मकता अवरूद्ध होती है।

(ii) द्वितीय अवस्था – 8 से 10 वर्ष जब वह समूह का सदस्य बनता है समूह प्रतिमानों के अनुरूप चलना से अवरूद्ध आता है।

(iii) तृतीय – 13 से 15 वर्ष – यहाँ वह विपरीत लिंग का अनुमोदन में संलग्न हो जाता है इससे भी अवरूद्धता आती है।

(iv) चतुर्थ – 17 से 19 वर्ष – व्यवसाय की प्राप्ति व प्रक्षिण के कारण सृजनात्मकता में अवरोध आता है।

सर्जनात्मकता व बुद्धि में संबंध –

◈ एक व्यक्ति सर्जनशील तथा बुद्धिमान दोनों हो सकते है परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति सर्जनशील ही हो। सृजनात्मकता व बुद्धि में सकारात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। सर्जननात्मकता के लिए एक विशेष मात्रा में बुद्धि का होना आवश्यक है (औसत से अधिक परन्तु विशेष मात्रा से अधिक बुद्धि का सृजनात्मकता से सहसंबंध नहीं होता है।)

◈ **टर्मन** – ''यह आवश्यक नहीं है अधिक बुद्धिमान व्यकित सृजनशील हो''

◈ **गिलफोड** – एक विध चितन बुद्धि का आधार है जबकि बहुविध चिंतन सर्जनात्मकता का आधार है।

◈ बुद्धि परीक्षा में ज्ञानात्मक व्यवहार की गति व शुद्धता पर बल दिया व मौलिकता पर बल दिया जाता है।

◈ **गिलफोर्ड** – कभी सर्जनात्मकता से अभिप्राय क्षमता से होता है, कभी सर्जनात्मक रचना से तथा कभी सर्जनात्मक उत्पादकता से।

◈ **आइजैंक** – सृजनात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नये सम्बन्धों का ज्ञान होता है।

सृजनात्मकता के आयाम –

1. मौलिकता (Originality) – बैरन ने बल दिया।
2. असाधारण (Unusualness) – गिलफोर्ड (सामान्य से हटकर)
3. संवेदनशीलता (Sensitivity) – रोलोमें ने वर्णन किया है।
4. प्रयोगात्मकता (लोवेल–नवचारों को बनाने व पहचानने की प्रवृत्ति है।)
5. उत्पाद (Product) – स्टेन ने माना है।
6. प्रक्रिया – टोरेन्स इसे – सम्बन्ध देखने व नये सम्बन्धों की उत्पत्ति को मानसिक प्रक्रिया कहा है।
7. सर्जनात्मकता विभिन्न योग्याताओं का योग है।
8. सृजनात्मकता रूपात्मक संश्लेषण है।
9. सर्जनात्मकता (Creativity) अन्तर्ज्ञान (Intuitive) का रूप है कांट ने इसे प्राकृतिक कहा है।
10. दैविक प्रेरणा – प्लेटो ने कहा है। (सृजनात्मकता)
11. सृजनात्मकता कॉस्मिक जीवन शक्ति – डार्विन (मानवीय सर्जनात्मकता सृजनात्मक शक्ति का प्रकृतिकरण है। जो की जैव पदार्थ के जीवन में निहित है।)
12. सर्जनात्मकता **नीत्शे** के शब्दों में पागलपन है।
13. गिलफोर्ड ने गुण सिद्धान्त दिया जिसमें समस्या के प्रति चेतना, चिंतन की निरन्तरता, शब्द व सम्बन्धों की निरन्तरता, अभिव्यक्ति की निरन्तरता, समन्वय, मौलिकता व पुन: परिभाषा
14. बार्टलेट ने सर्जनात्मकता को साहसिक चिंतन कहा है।

टेलर के अनुसार सृजनात्मकता के प्रकार (स्तर सिद्धान्त)–

◈ यह निम्न से उच्चतर की ओर होती है।

1. **अभिव्यक्तिात्मक सृजनात्मकता (Expressive) जैसे :** पेंटिंग
2. **उत्पादक सृजनात्मकता (Productive)** – कलात्मक व वैज्ञानिक वस्तु उत्पादन।
3. **आविष्कारक सृजनात्मकता (Inventive)** – नवीन खोज
4. **नवाचारित सृजनात्मकता (Innovative)** – नवीन व मौलिक अर्थ देने से संबंधित।
5. **आपत्तिक सृजनात्मकता (Emergentive)** – अल्प/तुरन्त किसी समस्या का नया व मौलिक अर्थ खोजना।

प्रतिभाशाली व सृजनात्मक में अन्तर –

1. यह अनिवार्य नहीं की सभी प्रतिभाशाली सृजनात्मक हो।
2. प्रतिभाशाली सदैव सफलता उन्मुख जबकि सृजनात्मक नहीं।
3. प्रतिभाशाली उच्च बुद्धि, लब्धी 130+ होते है सृजनात्मक औसत से अधिक 110 – 120 IQ वाले। (मन्द बुद्धि सर्जनात्मक नहीं होते है।)
4. प्रतिभाशाली अध्ययन में विशेष सफलता सृजनात्मक सामान्य।

विशेष : बैरन – सृजनात्मकता पहले से विधमान वस्तु व तत्वों को मिलाकर नये योग्य बनाना है।

◈ **मैडनिक** – सृजनात्मकता साहचर्यात्मक तत्वों का नवीनतम

गलत धारणा/पूर्वाग्रह बना लेना।

- **प्लेसीबो प्रभाव क्या है** – किसी भी योग्य व्यक्ति के प्रभाव से व उसके मधुर व्यवहार से बीमार व्यक्ति का सही हो जाना जैसे बालक को चॉकलेट देकर सही कर देना। अर्थात् मन से भय निकालना व व्यक्ति का सही हो जाना।
- **रीसेन्सी प्रभाव** – यह आवर्ती प्रभाव होता है जिसे आसन्नता प्रभाव कहते है। यह सबसे अंत में प्राप्त होने वाली सूचना की प्रबल भूमिका मानता है।
- **स्वयोजना (Self Schema)** – संज्ञानात्मक भावात्मक संरचना जो अनुभव से विकसित होता है यह सामन्यीकरण से युक्त अवधारणा है जैसे – मैं भावुक हूँ मैं बर्हिमुखी हूँ यह प्रासंगिक जानकारी को याद रखने में मदद करता है इसको बदलना मुश्किल होता है।
- **आत्म की अवधारणा** – आप कौन है क्या विशेषताएँ है इसको व्यक्त करना ही आत्म है जो माता-पिता, मित्र, शिक्षक से सहयोग से बनता है, आत्म व्यक्ति के सचेतन अनुभव, विचार, चिंतन व भावनाओं की समग्रता से है।
- **व्यक्तिगत अनन्यता (Personal Identify)** - व्यक्ति के वे गुण जो उसे दूसरों से अलग करते है जैसे मैं गायककार हूँ, मेहनती हूँ।
- **सामाजिक अनन्यता (Social Identify)** – वे पक्ष जो किसी सामाजिक/सांस्कृतिक समूह से जोड़ते है जैसे मैं हिन्दू हूँ, राजपूत हूँ, राजस्थानी हूँ।
- **आत्म दो प्रकार का होता है** –(i) व्यक्तिगत आत्म जिमसें स्वयं के बारे में संबद्ध होने का अनुभव होता है। (ii) सामाजिक आत्म – इसमें दूसरों के संबंध में होता है। इसमें परिवार व सामाजिक संबंधों को महत्व दिया जाता है।
- **आत्म सम्मान (Self Esteem)**– व्यक्ति का स्वयं की योग्यता व मूल्यों का समग्र आकलन या निर्णय ही आत्मसम्मान है। जिन बालकों उच्च शैक्षिक आत्मसम्मान होता है उनका निष्पादन कम आत्मसम्मान वालों की अपेक्षा अधिक होता है।
- **आत्मसक्षमता (Self Efficacy)** – इनमें यह विश्वास होता है कि वे अपने जीवन के परिणामों को स्वयं नियंत्रित कर सकते है किसी स्थिति विशेष के अनुसार योग्यता व व्यवहार की क्षमता है तो उसमें आत्म सक्षमता ज्यादा होगी। यह बाण्डुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धान्त पर आधारित है ऐसे व्यक्ति में भय कम, इच्छा शक्ति प्रबल, तत्काल अमल करना, जोखिम उठाना व आत्मविश्वास से युक्त होते है।
- **आत्म नियमन (Self Regulation)** – स्वयं के व्यवहार को संगठित व परिवीक्षण करने की योग्यता से है। आत्मनियंत्रण के लिए मनोवैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग होता है जैसे – (i) अपने व्यवहार का प्रेक्षण (ii) आत्म अनुदेशन (स्वयं को मनोवांछित करने के लिए निर्देश देना) (iii) आत्म प्रबलन (Self reinforcment) – ऐसे व्यवहार को पुरस्कृत करना जिनके प्रभाव सुखद होते है।

अभिवृत्ति (Attitude)

- अभिवृत्ति शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **Abtus** से हुई है जिसका अर्थ होता है योग्यता सुविधा।
- **ड्रेवर** – व्यवहार को एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक तत्परता का नाम अभिवृत्ति है।
- **अर्थ** – अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से होता है जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति व्यक्त किया जाता हैं।
- **थर्स्टन** के अनुसार – कुछ मनोवैज्ञानिक पदार्थो से सम्बन्धित सकारात्मक या नकारात्मक प्रभावों की मात्रा अभिवृति कहलाता है।
- **रेमर्स, रूमेल व गेज** के अनुसार – अभिवृत्ति अनुभवों द्वारा व्यवस्थित संवेगात्मक प्रवृत्ति है जिसमें मनोवैज्ञानिक पदार्थो के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया होती है।
- **ट्रेवर्स** – व्यवहार को एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक तत्परता अभिवृत्ति।

अभिवृत्ति के प्रकार –

1. **भावात्मक/सकारात्मक अभिवृत्ति (Affective/Positive attitude)** – किसी में विश्वास रखना, किसी को पसन्द करना, उत्तरादायित्व व उद्देश्य युक्त होना, खुलापन का होना, विनोदी होना।
2. **नकारात्मक अभिवृत्ति (Negative attitude)** – किसी से दूर भागना व अविश्वास रखना।

दो गौण प्रकार –

1. **सामान्य अभिवृत्ति (General Attitude)** – सभी के प्रति प्रेम या घृणा का भाव।
2. **विशिष्ट अभिवृत्ति (Specific attitude)** – व्यक्ति विशेष के प्रति घृणा/प्रेम का भाव।

अभिवृत्ति की विशेषताएँ –

- अभिवृति अनुभव के आधार पर अर्जित होती है।
  (Attitude is acquired on the basis of experience)
- अभिवृत्ति पक्ष/विपक्ष दो दिशाओं में व्यक्त की जाती है।
  (Attitude is expressed in two directions for/against)
- अभिवृत्ति का संबंध व्यक्ति के भाव तथा संवेगों से होता है।
  (Attitude is related to the feelings and emotions of a person)
- अभिवृत्ति सदैव परिवर्तनशील होती है।
  (Attitude is always changeable)

परामर्श एवं निर्देशन में अन्तर -

क्र.सं.	निर्देशन	परामर्श
1.	निर्देशन का क्षेत्र व्यापक है।	इसका विकास सामाजिक विज्ञानों के साथ हुआ है।
2.	निर्देशन की आवश्यकता सभी व्यक्तियों को होती है।	परामर्श की आवश्यकता केवल उन व्यक्तियों को होती है, जिन्हें गंभीर शैक्षिक, व्यावसायिक अथवा मनोवैज्ञानिक
3.	निर्देशन व्यक्तिक तथा सामूहिक दोनों रूप में दिया जाता है।	परामर्श केवल व्यक्तिक रूप से दिया जाता है।
4.	निर्देशन जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।	परामर्श की आवश्यकता सब होती है जब व्यक्ति गंभीर समस्या से ग्रस्त हो।
5.	निर्देशन समय, शक्ति तथा वित्तीय रूप से मितव्ययी है।	परामर्श में समय तथा ज़र्च दोनों ज्यादा लगता है।
6.	निर्देशन प्रदान करने हेतु साक्षात्कार आवश्यक नहीं।	परामर्श में साक्षात्कार आवश्यक है।
7.	निर्देशन व्यक्ति की क्षमताओं, रूचिओं, अभिरूचियों एवं योग्यताओं को पहचानने तथा उसका उपयोग कर खुद का तथा समाज का विकास करने में मदद करता है।	परामर्श व्यक्तियों की समस्या को दूर करके उसे तनाव मुक्त बनता है तथा जीवन की नई राह दिखाता है।

❖❖❖

अभ्यास प्रश्न

1. **अभिवृत्ति है-**
   (1) एक भावात्मक प्रवृत्ति जो अनुभव के द्वारा संगठित होकर किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति पसंदगी या नापसंगदी के रूप में प्रतिक्रिया करती है।
   (2) व्यक्ति की बीजभूत क्षमता जो एक विशिष्ट प्रकार की होती है।
   (3) एक ऐसी विशेषता जो व्यक्ति की योग्यता का परिचायक है जिसे किसी प्रदत्त क्षेत्र में विशिष्ट प्रशिक्षण, ज्ञान व कौशल से सीखाजा सकता है।
   (4) इलमें से कोई नहीं **(1)**

2. **मनोवृत्ति के विकास के संबंध में से कौनसा विकल्प सही नहीं है-**
   (1) मनोवृत्तियों के विकास पर शारीरिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है।
   (2) मनोवृत्तियाँ वंशानुक्रम से प्रभावित होती है।
   (3) अध्यापक इनके विकास में बालकों की सहायता कर सकते है।
   (4) भावनात्मक विकास का इनके विकास पर प्रभाव पड़ता है। **(2)**

3. **कुडार परीक्षा..... मापन के लिए अभिकल्पित है-**
   (1) अभिवृत्ति (2) अभिक्षमता
   (3) अभिरूचि (4) अवधान **(3)**

4. **निम्नलिखित में से कौन-सा एक अभिक्षमता परीक्षण का उपयुक्त अनुप्रयोग होगा ?**
   (1) बालक ने अध्यापक की कक्षा में क्या सीखा इसका परीक्षण करना।
   (2) बालक के गणित के मानकों के निर्धारण का परीक्षण करना।
   (3) बालक के चिकित्सा व्यवसाय (डॉक्टरी) में सफल होने का परीक्षण करना।
   (4) बालक का बोर्ड की कक्षा को पास कर सकने के निर्धारण का परीक्षण का परीक्षण करना। **(3)**

5. **निम्नलिखित में से कौनसी अभिवृत्ति की विशेषता नहीं है ?**
   (1) अभिवृत्ति जन्मजात होती है।
   (2) अभिवृत्ति स्थायी नहीं होती यह परिवर्तनीय
   (3) अभिवृत्ति हमारे व्यवहारों और क्रियाकलापों को प्रभावित करती है।
   (4) अभिवृत्ति हमेश किसी वस्तु, परिस्थिति, व्यक्ति इत्यादि के प्रति प्रदर्शित होती है। **(1)**

6. **निम्नलिखित में से कौनसा सुपर द्वारा प्रस्तावित रूचि का प्रकार नहीं है ?**

- **तदनुभूति (Empathey)** – दुसरे की भावनाओं के प्रति एक सांवेगिक अनुक्रिया करना जो दूसरे व्यक्ति की भावनाओं के समान हो।
- **इदम् या इड** – फ्रायड के अनुसार, मानस का वह आवेगी एवं अचेतन अंश जो मूलप्रवृतिक अंतर्नोदो के परितोषण की ओर सुखेप्सा–सिद्धान्त के माध्यम से क्रिया शील होता है। इड की वास्तविक अचेतन या मानस का गहनतम अंश समझा जाता है।
- **बुद्धि लब्धि** – कालानुक्र मिक आयु से मानसिक आयु का अनुपात इंगित करने वाला मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त एक सूचकांक।
- **अभिरूचि** – एक या अधिक विशिष्ट क्रियाकलापों के लिए व्यक्ति की वरीयता।
- **कामशक्ति या लिबिडो** – फ्रायड ने इस पद को प्रस्तावित किया। फ्रायड की विचारधारा में लिबिडो कामुकता की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति मात्र थी।
- **मानसिक आयु (MA)** – आयु के रूप में अभिव्यक्त बौद्धिक कार्य–शीलता का मापक।
- **दुर्भीति (फोबिया)** – जिससे व्यक्ति को अत्यन्त कम या बिल्कुल खतरा नहीं रहता। ऐसी किसी विशेष वस्तु या स्थिति का प्रबल, सतत एवं तर्कहीन भय।
- **प्रक्षेपण** – एक रक्षा युक्ति स्वयं अपने विशेषकों, अभिवृतियों या आत्मनिष्ठ प्रक्रियाओं का अनजाने ही दूसरे पर गुणारोपण करने की प्रक्रिया।
- **दमन** – एक ऐसी रक्षा युक्ति जिसमें व्यक्ति सभी अस्वीकार्य, दुश्चिंताकारी विचारों और आवेगों का प्रत्यक्ष सामना करने से बचने के लिए अचेतन में ढकेल देता है।
- **अन्विति योजना** – एक मानसिक संरचना जो सामाजिक (तथा अन्य) संज्ञान को निर्देशित करती है।
- **मनोविदलता** – मनस्तापी प्रतिक्रियाओं का समूह जिसमें समाकलित व्यक्तित्व, कार्यशीलता विघटित हो जाती है, वास्तविकता से विनिवर्तन, सांवेगिक अनुरोध तथा विरूपण एवं विचार व व्यवहार विक्षुब्ध हो जाता है।
- **परअहम्** – फ्रायड के अनुसार मनुष्य में विकसित होने वाली अंतिम व्यक्तित्व संरचना। यह समाज में सही और गलत के मानकों को प्रतिनिधित्व करता है जो उसे माता–पिता, शिक्षकों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से प्राप्त होते है।
- **विसंवेदीकरण** – चिंता व भय उत्पन्न करने वाले उद्दीपकों के प्रतिम क्रमश: व्यक्ति की संवेदनशीलता घटाना।

❖❖❖

अवनी APP डाउनलोड करने के लिए निम्न क्यू आर कोड स्केन करे –

For More Update

@DH5AV | Join us on Dheer Singh Dhabhai | dheer.dhabhai_official